राज
कामिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 60
खजाना
नागराज
एक
रोमांचक
विशेषांक

नागराज अपने चाचा नागपाशा की बातों के जाल में फंसकर अपने अतीत से जुड़े रहस्यों को जानने और तिलिस्म में रखे खज़ाने को हासिल करने निकल पड़ा। तिलिस्म की जानलेवा भयंकर मुश्किलों को पार करता हुआ जब वह खज़ाने के बक्से तक पहुंचा तो नागपाशा भी वहां अपना असली रंग दिखाने पहुंच गया। लेकिन नागराज और नगीना उसे भगा देने में सफल हो गए। फिर नागराज और नगीना ने उस बड़े बक्से को खोला और यह देखकर उन दोनों की आंखें फटी की फटी रह गईं कि बक्सा खाली था। ना उसमें नागराज के अतीत से संबंधित कोई पाण्डुलिपि थी और नाही था अकल्पनीय बेशकीमती...

खज़ाना

उपरोक्त को विस्तार से जानने के जिज्ञासु पाठक 'नागपाशा' को पढ़कर अपनी जिज्ञासा शांत कर सकते हैं।

नगीना और नागराज के मस्तिष्क, अभी तक सांय-सांय कर रहे थे-
कुलदेवता कालजयी जैसे अपराजित शक्ति वाले प्राणी के होते हुए आखिर खजाना और उसमें रखी पाण्डु-लिपि ले कौन गया?
नहीं! कालजयी के रहते यह खजाना कहीं जा नहीं सकता था। यह खजाना, कालजयी के अंतर्धान होने के बाद गायब हुआ है!
यानी जिसने भी खजाना गायब किया है, उसने यह खजाना तब गायब किया होगा, जब हम नागपाश से लड़ रहे थे!
कमाल है! आखिर वह रहस्यमय शख्स कौन हो सकता है, जो न सिर्फ खजाने के बारे में जानता है, बल्कि उसको तिलिस्म के अंदर से, पलक झपकते ही ले जाने की क्षमता भी रखता है...
...अगर मुझे... एक मिनट! यह बक्से में क्या पड़ा हुआ है?
फेस मास्क!
ये तो कोई फेस-मास्क है!
फेस मास्क! जरा दिखाना तो...
नगीना ने फेस मास्क का मुआयना किया तो उसकी आंखें फैलती चली गईं—
ओह! ओह!
क्या हुआ नगीना?

खज़ाने को ले जाने वाले का पता००० ओह !
यह मैं जोश में क्या बकने जा रही थी ?
क्या कह रही थी तुम, नगीना ?
अ००० कुछ नहीं ! पहले इस डरावने तिलिस्म से बाहर तो निकलो !
वो तो ठीक है ! लेकिन हम बाहर कैसे निकलेंगे नगीना ?
जिस रास्ते से हम अंदर आए थे, उसी से बाहर निकलने की कोशिश करते हैं !
एक मिनट ! उस कोने से रोशनी कैसी आ रही है ?
कमाल है ! यहां पर तो एक दरवाजा सा खुल रहा है ! यह जरूर इस तिलिस्म का 'निकास मार्ग' है, जो तिलिस्म टूटने के बाद, अपने-आप ही खुल जाता होगा !
यानी वह खज़ाना ले जाने वाला भी यहीं से खज़ाना ले गया होगा ! अभी वह ज्यादा दूर भी नहीं गया होगा !
जल्द ही-
ओह ! खुली हवा !
अब मेरा काम खत्म हुआ, नागराज ! मैं एक दोस्त के नाते तुम्हारी जितनी मदद कर सकती थी, उतनी कर दी !
अब मैं चलती हूं ! कई जरूरी काम निपटाने हैं !
इतनी भी क्या जल्दी है, नगीना ?

पहले मुझे यह तो बताती जाओ, कि वह मॉस्क किसका था! कौन ले गया है मेरा खजाना और पाण्डुलिपि?
यह मुझे क्या पता, नागराज?
तुमको पता है, नगीना! तुम खजाने के बक्से में पड़ा वह मास्क पहचान गई थी। बताओ किसका है वह मॉस्क?
यह जानकर क्या करोगे नागराज? तुम्हारा खजाना तो चला गया। खोई हुई चीज कभी वापस नहीं आती!
और अब मुझे भी जाने...
नहीं नगीना! तुम्हारी बातों से धोखे की बू आ रही है। बगैर मुझे बताए तुम यहां से हिल भी नहीं सकती हो!
तू मुझे रोक नहीं सकता नागराज! वैसे तो मैं अदृश्य होकर भी यहां से जा सकती हूं!
पर तुझे सच्चाई बताए बगैर अगर मैं चली गई तो मेरा दिल मुझे कचोटता रहेगा!
तड़ाक
आह!

तुमने मुझ पर वार किया, नगीना! पर क्यों?

दुश्मन पर सिर्फ वार ही किया जाता है, नागराज!

दुश्मन! पर तुम तो मेरी मित्र हो! तुमने मेरी मदद की। दूसरे विलेनों से मेरी जान बचाई!

मैं तुम्हारी मित्र सिर्फ अपनी सुविधा के लिए बनी थी नागराज! और दूसरे विलेनों से तुम्हारी जान मैंने सिर्फ इस लिए बचाई...

...क्योंकि खजाना उसी को मिलता जो तुम्हारी जान लेता! और मैं यह नहीं चाहती थी कि खजाना मेरे अलावा कोई और हासिल करे!

लेकिन साथ ही साथ मुझे नागपाशा की नीयत पर भी शक ही रहा था! इसलिए बाद मैंने तुम्हारी मित्र बन गई!

अगर नागपाशा मुझे धोखा देता तो मैं तुम्हारी सहायता से उसे खत्म कर देती। और अगर वह खजाना मुझे दे देता, तो मैं तुमको, नागपाशा के हवाले कर देती!

दोनों ही परिस्थितियों में जीत नगीना की ही होती नागराज!

अच्छा किया जो तूने अपना असली रूप मुझे दिखा दिया नगीना!

तेरे जैसे दोस्त ही दोस्ती के अमृत में विश्वासघात का जहर घोलते हैं! अब मैं तुझे सच बोलने पर मजबूर कर दूंगा!

ये बच्चों वाले खेल छोड़ो, नागराज!

वैसे तो तेरे बंधनों से मैं अदृश्य होकर भी निकल सकती हूं...

००० लेकिन अदृश्य होने के लिए मुझे अपनी शक्ति का बड़ा हिस्सा खर्चना पड़ता है! और मैं अपनी शक्ति अभी बचाकर रखना चाहती हूं!
क्योंकि मुझे अभी खज़ाना भी हासिल करना है। और उस दुश्मन से लड़ने के लिए मुझे शायद अपनी पूरी शक्ति का इस्तेमाल करना पड़े!
फिर भी, नागतंत्रिका नगीना की शारीरिक शक्ति ही तेरे नाग-बंधनों को तोड़ने के लिए पर्याप्त है!
और अब मैं तेरी अति शीघ्र मौत का इंतजाम कर दूं!
क्योंकि जितनी देर तक मैं तुमसे लड़ूंगी, उतना ही खज़ाना मुझसे दूर होता जाएगा!
?
इससे पहले कि नागराज संभल पाता०००
००० वह नगीना के जाल में फंस चुका था-
आह! मुझे दम घुटता सा महसूस हो रहा है!
यह नगीना की तंत्र-ऊर्जा का कवच है नागराज! इसमें सिर्फ तेरी चंद सांसों लायक हवा है। और उसके बाद तुझे मिलेगी एक दम घोंटू और दर्दनाक मौत!
और तुम न तो इन दीवारों को तोड़ सकते हो, और न ही जमीन से चिपक चुके इसके आधार को ऊपर उठा सकते हो!

अब तुम्हारी मौत निश्चित है नागराज ! लेकिन मेरे पास यह सुनहरा नज़ारा देखने का वक्त नहीं है। मैं तो चली !
ठहरो नगीना !
आवाज़ की दिशा में घूमी नगीना की आंखें फैलती चली गईं—
तुम!
हां ! मैं नगीना !
और इसी दौरान—
... और फिर मैं कालभुजंगा की खोह के रास्ते से यहां तक आपके पास आ गया !
हम्म ! यानी तुम्हारे हाथ असफलता ही लगी !
उफ़ ! इतने वर्षों और इतनी मेहनतों के बाद मैं नागराज़ के बल पर खजाने तक पहुंचा, लेकिन सब बेकार गया । खजाना पहले से ही कोई और उड़ा ले गया ?
लेकिन वह था कौन ? मेरे, नागराज और नगीना के सिवा कौन था वो जो खजाने के रहस्य को जानता था ?
शायद मैं तुम्हें तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर दे सकता हूं, नागपाशा !
क्या मतलब ?
मेरे सन्देह के दायरे में एक व्यक्ति आ रहा है। लेकिन... ...सन्देह गलत भी हो सकता है। क्योंकि उस व्यक्ति का बहुत वर्षों से कोई समाचार नहीं मिला है । हो सकता है कि वह मर चुका हो !
किसकी बात कर रहे हैं आप ?

गुरु ने नाम बताया तो नागपाशा यूं चिंहुका, जैसे सैकड़ों सुईयां एक साथ उसको चुभो दी गई हों—
अ... आप ठीक कहते हैं! आप बिल्कुल ठीक कहते हैं गुरुदेव! जरूर 'वही' होगा क्योंकि हमारे अलावा एकमात्र वही शख्स उस खजाने और तिलिस्म के बारे में जानता है! खजाना गायब होने में कहीं ना कहीं उसका हाथ जरूर है!...
...लेकिन वह होगा तो होगा कहां?
कहीं भी होगा, मैं उसे ढूंढ़ निकालूंगा!...
...अपने इन यंत्रों के सहारे।
जबकि इधर—
फेसलेस! मैं तुमको ही ढूंढ़ने जा रही थी। अच्छा हुआ कि तुम खुद ही मेरे पास आ गए!
तुम मुझे ढूंढ़ रही थी! पर क्यों?

इतने भोले मत बनो, फेसलेस! खजाने के बक्से में मास्क छोड़ने का सिर्फ एक ही मतलब हो सकता है। और वह ये कि तुम सबको यह बताना चाहते थे कि खजाना तुम ही ले गए हो। अब बताओ, वह खजाना कहां है?
फेसलेस जहां पर भी जाता है, अपनी निशानी यानी मास्क जरूर छोड़ता है!
और रही, सबको बताने की बात, तो तुमने यह नहीं सोचा कि वह मैंने इसलिए किया ताकि तुम मुझे ढूंढ़ती-ढूंढ़ती मेरे पास आ जाओ, और मैं तुमको पकड़ सकूं...
...और अब!...
...नागराज को आजाद कर दो, नगीना! वर्ना मैं तुम्हारे बदन की सारी हड्डियों को तोड़कर तुम्हारे हाथ में दे दूंगा!
ताड़
आह!
यानी तुम नागराज के दोस्त...
मामला बहुत जटिल हो गया! कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि कौन किसका दोस्त है और किसका दुश्मन!
आखिर ये फेसलेस है कौन?
खैर! कोई भी हो! अब खजाने का पता तो ये मार खाकर ही बताएगा!

उधर- नागराज तंत्र-कवच से बाहर निकलने की जीतोड़ मगर नाकाम कोशिश कर रहा था-
आह! मेरा दम घुटता ही जा रहा है!
और मैं अपनी सारी कोशिशों के बावजूद न तो इस खोल को तिलभर भी हिला पा रहा हूं और न ही इन दीवारों को तोड़ पा रहा हूं!
नागराज की मौत चंद पलों की दूरी पर ही खड़ी थी-
लेकिन उसके मददगार की कोशिशें जारी थीं-
ओह! यह क्या? मेरी तांत्रिक किरणें इस पर बेकार साबित हो रही हैं!
तेरे इन तांत्रिक वारों का मुझ पर असर होने वाला नहीं है नगीना!
... क्योंकि तेरे सारे तांत्रिक वारों को, मेरा यह ताबीज सोखने की क्षमता रखता है!
लेकिन मेरे वारों से तुझे कोई नहीं बचा सकता!
ताड़
इसलिए अपने बदन पर तरस खा, और नागराज को आजाद कर दे!
नागराज भी आश्चर्यचकित था-
तड़ाक
ये फेसलेस तो वही है जिसका मास्क खजाने के बक्से में पड़ा हुआ था। यानी खजाना यही ले गया है। इस हिसाब से तो इसे मेरा दुश्मन होना चाहिए!
लेकिन यह तो नगीना से मेरी जान बचाने के लिए लड़ रहा है। खैर... अब अगर मुझे कोई बचा सकता है तो सिर्फ फेसलेस!

फेसलेस, नागराज को बचा तो जरूर लेता...
...अगर वह खुद बच पाता तो–
तू एक गलती कर गया, फेसलेस, जो मुझे ताबीज़ के बारे में बता दिया! अब अगर मैं तेरे ताबीज को नष्ट कर दूं तो तू बेबस चूहे जैसा हो जाएगा!
नगीना ने अपनी सारी शक्ति को मुट्ठी में बंधे ताबीज पर केन्द्रित कर दिया–
सर्रर्र्ट
और फेसलेस के गले से उबलती चीखों की आवाजें तेज, और तेज होने लगीं–
ईयाऽऽऽऊ
आऽऽऽह
आखिरकार नगीना की तंत्रशक्तियों के आगे...
...फेसलेस का ताबीज टिक नहीं सका–
?

अब नगीना की बारी थी–
अब बता! कहां पर छुपाकर रखा है तूने खजाना?
कैंक
कक
आह! नगीना ने फेसलेस को बेबस कर दिया है। अब तो मुझे फेसलेस को बचाना पड़ेगा। आह!
लेकिन कैसे? एक मिनट! इस तंत्र-कवच में एक कमजोरी है और वह यह कि इसकी तली नहीं है। मेरी सर्पसेना इस पथरीली जमीन में सुरंग तो नहीं बना सकती...
...तो मैं अपनी बची खुची शक्ति का इस्तेमाल कर के...
...इस कैद से आजाद हो सकता हूं!
...लेकिन चट्टानों के बीच की दरारों में घुसकर चट्टानों के जोड़ को कमजोर कर सकती है। और एक बार ये जोड़ कमजोर हो गए...
कड़ड़ड़ड़... ड़ड़

उधर– नगीना के वार, फेसलेस को तड़पने पर मजबूर कर दे रहे थे–
बता ! बता, कहां पर छिपाया है तूने वह खजाना ?
सटाक
आहहहह!
लेकिन फेसलेस ने तो जैसे न बोलने की कसम खाई हुई थी। चाहे नगीना उसकी जान ही क्यों न ले ले–
लेकिन अब फेसलेस अकेला नहीं था–
ओह ! नगीना तो फेसलेस की जान लेने पर उतारू है ! मुझे इसे... अरे यह क्या ? नगीना जब-जब तंत्र वार करती है, तब-तब इसके गले में लटकी खोपड़ी चमकने लगती है !
लेकिन इस बात पर मेरा ध्यान कभी क्यों नहीं गया ? शायद इस लिए क्योंकि मैं नगीना को पहली बार किसी और से लड़ते देख रहा हूं। लेकिन इस बात का मतलब क्या हो सकता है ?
खैर ! यह मैं बाद में सोचूंगा। अभी तो मुझे फेसलेस की जान बचानी है !
वक्त बहुत ही कम था–
नगीना ने, फेसलेस की गर्दन अपने तंत्र शिकंजे में कस ली थी–
बता ! बोल वर्ना अपनी जान से हाथ धो बैठेगा !
मास्क के अंदर, फेसलेस की आंखें अपने कटोरों से बाहर उबल आई थीं–
मौत उसकी तरफ इंच इंच करके बढ़ रही थी–

लेकिन तभी-
नगीना का शिकंजा खुल गया-
आह!
यह कौन?
तड़ाक
नागराज! तुम... आजाद कैसे हो गए?
यह सोचना छोड़ो कि मैं आजाद कैसे हो गया, नगीना...
...बल्कि यह सोचो कि तुम आजाद कब तक रहोगी!
नगीना को तो कालदूत भी कैद करके नहीं रख सका, नागराज।
नगीना आजाद थी और आजाद ही रहेगी। और साथ ही साथ तुझको भी आजाद कराकर जाएगी...
...इस दुनिया से!
नगीना की तंत्र-शक्तियों के सामने मेरी सर्प-शक्तियाँ कुछ नहीं हैं। लड़ाई जीतने के लिए दिमाग का इस्तेमाल करना पड़ेगा...
...अरे! नगीना के मुझ पर वार करते ही यह खोपड़ी फिर चमकने लगी। कहीं यह खोपड़ी ही नगीना की शक्तियों का केन्द्र तो नहीं है!

खैर ! इतना दिमाग लगाने की जरूरत नहीं है। खोपड़ी की माला इसकी गर्दन से अलग करते ही सच्चाई का पता चल जाएगा !
नागराज ने बिजली की तरह लपककर खोपड़ी की डोरी को थाम लिया-
लेकिन उसका शक्तिशाली झटका भी, डोरी को नगीना के शरीर से अलग न कर सका-
ओह ! तू यह 'तंत्र-मुंड' पाने की कोशिश कर रहा है !
यानी तू समझ गया है कि मेरी शक्तियों को असीमित बनाने वाला यह मुंड ही है !
तड़ाक
इसके बगैर नगीना की शक्तियां उतनी घातक नहीं रह जातीं...
... और इसके संपर्क में नहीं रहने पर मैं अपनी अदृश्य शक्ति और प्रतिरूप शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकती !
लेकिन एक बात और सुन ले ! यह खोपड़ी की डोरी मंत्रित है। दुनिया की कोई भी शक्ति इसे काट नहीं सकती !
यह 'तंत्र मुंड' नगीना के शरीर से कभी अलग नहीं हो सकता !
आ ऽह !
कड़ाक
नगीना की बात सच लगती है ! मेरे शरीर में अनगिनत सर्पों का असाधारण बल है। फिर भी मैं इस मामूली सी दिखने वाली डोर को तोड़ नहीं सका। अब कोई और रास्ता ढूंढ निकालना होगा। अतिशीघ्र !

एक मिनट! एक मिनट! नगीना के अनुसार इस संसार की कोई भी शक्ति, मंत्रित डोरी को काट नहीं सकती! लेकिन अगर वह शक्ति संसार के बाहर की हो तो...
...जैसे कि ये नागफनी सर्प! जो देव कालजयी ने मुझे आशीर्वाद में दिए हैं!
शायद ये नगीना के 'तंत्र-मुंड' की मंत्रित डोरी को काट सकें!
नागराज की तरकीब काम कर गई—
?
ढ़क
नागफनी सर्पों के तेज नेजों ने डोरी को काट दिया—
खोपड़ी दूर जा गिरी—
लेकिन नगीना की शक्तियों पर कोई फर्क नहीं पड़ा—
आश्चर्य मत करो नागराज! ये खोपड़ी जब तक मेरी शक्ति घेरे के अंदर रहेगी तब तक इसकी शक्ति मुझ तक पहुंचती रहेगी!
कड़ाक
आह! यह क्या?
तो फिर मैं ऐसा इंतजाम कर देता हूं नगीना, कि ये तंत्र-किरणें तुम तक न पहुंच सकें!
नागराज के सर्पों ने खोपड़ी को पूरी तरह से ढक लिया—
और नगीना तक तंत्र किरणों का पहुंचना बंद हो गया
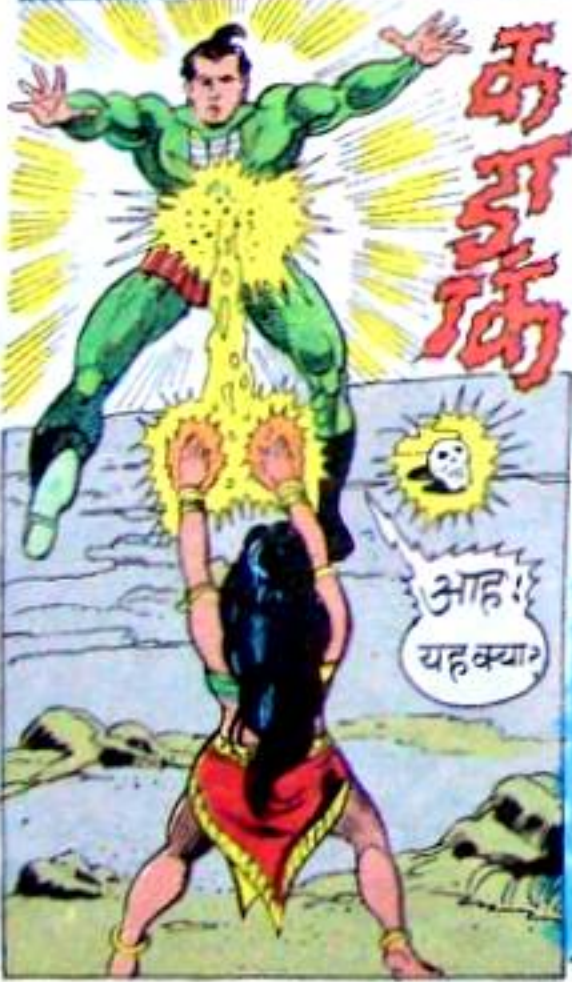
पसीने-पसीने हो उठी नगीना-
लेकिन फिर भी उसने कदम पीछे नहीं हटाए-
तड़ाक..
अब तेरे वारों का असर मामूली रह गया है, नगीना!
यह बात तूने ही मुझे बताई है न?
और अब मैं तुझे कहीं भागने नहीं दूंगा!
वाह, नागराज...
धड़ाक
...जरा बहती गंगा में मुझे भी हाथ धो लेने दो!
ताड़
आह!
नगीना की शक्ति को कम करके चूहे अपने आपको शेर समझ रहे हैं!
लेकिन एक बार अगर तंत्र-मुंड मेरे हाथ में आ गया तो उसके बाद तुम लोगों की खैर नहीं।
नगीना, सब कुछ भूलकर खोपड़ी की तरफ लपकी-
और उसके हाथ में कई विष भरे दांत आ गड़े-
और इन काटने वाले सर्पों में, नागफनी सर्प भी शामिल थे-
ईस्स
हिस्स
वैसे तो नाग तांत्रिका नगीना पर, सांपों का विष बेअसर था
लेकिन इन विषों में, नागफनी सर्पों का विष भी शामिल था-

वे नागफनी सर्प, जिनके विषदंतों में भरा था, कालजयी देव का विष—
नगीना पर नशा सा छाने लगा—
... और इन दोनों से लिपटूंगी!
आह! मेरा सिर घूम रहा है। इस अवस्था में मैं नागराज और फेसलेस का एक साथ सामना नहीं कर सकती! अब मुझे अपनी शक्ति को एकत्रित करना होगा। और उसके बाद मैं फिर वापस आऊंगी!...
अभी मैं तंत्र-मुंड के संपर्क में हूं। इसलिए अपनी अदृश्य शक्ति का प्रयोग कर सकती हूं!
नागराज! ये तो अदृश्य हो रही है!
हम इसको रोकने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं फेसलेस!
लेकिन अब मुझे इसकी कमज़ोरी का पता चल गया है। अगली बार ये मेरे हाथों से बचकर नहीं जा पाएगी!
तुमने मेरी जान बचाई। इसके लिए धन्यवाद नागराज!
नागराज के चेहरे पर मित्रता का कोई भाव नहीं उभरा—
मैंने तुम्हें नागपाशा के अड्डे पर बाकी विलेन्स के साथ देखा था, तुम उनमें से ही एक हो। तुम ने नगीना से मेरी जान बचाने के एवज में जो एहसान किया, वह बराबर हो गया! अब चुपचाप खजाना मुझे सौंप दो!

इसलिए जिस समय तुम और नगीना, नागपाशा से लड़ाई में व्यस्त थे, तो मैं चुपके से सारे खजाने को वहां से उड़ाकर ले गया—

लेकिन तुम उस तिलिस्म में पहुंचे कैसे?

कौन हो तुम?

समय आने पर सब पता चल जाएगा नागराज! फिलहाल तो तुम मेरे साथ चलो, ताकि मैं तुम्हें खजाने रूपी तुम्हारी अमानत सौंप दूं!

कहां ले जाना चाहता है ये मुझे? कहीं ये मुझे फिर किसी जाल में तो नहीं फंसा देगा? मुझे इससे पूरी तरह सावधान रहना होगा!

और वहां से थोड़ी ही दूर पर—
किसी की आंखें फटी जा रही थीं! पता नहीं भय से, या आश्चर्य से—
क... कौन हो तुम?
ये आंखें प्रोफेसर नागमणि की थीं! और वह अभी-अभी होश में आया था—
म... मैं... ल... दृद... दा... ख... से यहां कैसे आ गया? मैं तो खाई में गिर रहा था*! मैं बच कैसे गया?
...मेरा नाम वेदाचार्य है! और खाई में गिरने से हमने तुमको बचाया है! लेह से इस स्थान तक हम ही तुमको लाए हैं, नागमणि!
तेरे सारे सवालों का जवाब मैं एक-एक करके देता हूं...
त... तुम मेरा नाम कैसे जानते हो?
और... और... अरे! तुम तो अंधे हो! तुमने मुझको पहचाना कैसे?
प्रत्येक प्राणी का शरीर एक खास प्रकार की तरंगें छोड़ता है, नागमणि! और उन तरंगों में उसकी पहचान के साथ-साथ उसका भूत, वर्तमान और भविष्य भी छिपा रहता है। मैं इन तरंगों को उतनी ही आसानी से पढ़ सकता हूं...
...जितनी आसानी से तुम एक किताब पढ़ सकते हो!
परंतु तुमने मुझे बचाया क्यों? तुम मेरे दोस्त हो या दुश्मन?
मुझे तुममें कोई दिलचस्पी नहीं है, नागमणि! मुझे दिलचस्पी है... नागराज में!
यह सुना गया है कि तुमने नागराज को शिशु अवस्था में कहीं से पाया और फिर उसको नागशक्तियां प्रदान कीं...
*पढ़िए, नागराज का कॉमिक विशेषांक 'जहर'

कहानी 24वें पृष्ठ से जारी

हम भविष्यवक्ता ज्योतिषी हैं, नागमणि! योद्धा नहीं हैं। वृद्ध भी हो गए हैं...
...लेकिन इन हाथों में अभी भी वह ताकत है...
... जो तुमको सत्य बोलने पर बाध्य कर दे!
आऽऽह!
ठहरो! ठहरो! बताता हूं!
कड़कड़ा उठी नागमणि की कलाई—
लेकिन नागमणि के कुछ बोल पाने से पहले ही—
आचार्य जी...
ये तो... फेसलेस की आवाज है।
लेकिन मैं किसी और की भी शारीरिक तरंगें ग्रहण कर रहा हूं!...
...ये तो... नागराज है, नागराज!
नागराज अपनी अमानत को लेने आया है, आचार्य जी!
अवश्य मिलेगी! लेकिन पहले... नागराज?
नागराज का ध्यान कहीं और चला गया था—
नागमणि! ये... ये ज़िन्दा है? और... और ये यहां पर कैसे आ गया?

इसको हमने बचाया है, नागराज ! और हम ही इसको लेकर यहां तक आए हैं...
...क्योंकि ये ही हमको वे सुबूत देगा, जो ये सिद्ध करेंगे कि तुम ही विष्य खजाने के असली वारिस हो !
क्या मतलब ? यानी जिस बात को कुलदेव कालजयी प्रमाणित कर चुके हैं, उसे ये दुष्ट नागमणि प्रमाणित करेगा ?
और आप इस मामले में न्याय करने वाले कौन होते हैं ? कौन हैं आप और ये फेसलेस ?
देवलोग देवता होते हैं नागराज, भगवान नहीं। बेवलोग भी गलती कर सकते हैं। पुराणों में इस बात के अनगिनत प्रमाण हैं।
और हम कौन हैं, इसका पता भी तुमको अति-शीघ्र चल जाएगा। और अब तुम चुपचाप बैठकर नागमणि की बातें सुनो।
अधिकार से भरी वेदाचार्य की आवाज सुनकर...
...नागराज चुपचाप बैठने पर विवश हो गया—
कौन है यह वृद्ध व्यक्ति ? यह फेसलेस और इस वृद्ध का कोई षड्यंत्र तो नहीं ? मुझे सावधान रहना होगा ! परन्तु... परन्तु यह फेसलेस कहां चला गया ? अभी-अभी तो यहीं पर था।
वेदाचार्य के एक इशारे पर, प्रोफेसर नागमणि टेप की तरह चालू हो गया—
नागराज, शिशु अवस्था में मुझे तब मिला था, जब मैं विलक्षण जाति वाले सर्पों के विष की तलाश में इसी जंगल में आया था...

तब मेरे कानों में एक बच्चे के रोने की आवाज़ पड़ी—
वह आवाज़ पास के एक मंदिर से आ रही थी। वह बच्चा नागराज ही था। मैं उस पर नज़र पड़ते ही चौंक गया—
उस बच्चे में एक भयंकर विषयुक्त सर्प के लक्षण मौजूद थे—
मैंने उस बच्चे को मंदिर के पुजारी से मांग लिया—
उसने एक मनगढ़ंत कथा सुनाते हुए वह बच्चा मुझे खुशी-खुशी सौंप दिया—
यह मैं नहीं जानता कि उस पुजारी ने मुझसे झूठ क्यों बोला, पर बच्चा लेकर मैं वहाँ से चला आया—
पर जब अपनी लैबोरेटरी में मैंने बच्चे के खून की जांच की तो मैं आश्चर्यचकित रह गया—
बच्चे के खून में लाल रक्त कणों के साथ-साथ सूक्ष्म रूप से सर्प भी मौजूद थे—
यह रहस्य मेरी समझ के बाहर था—
नागराज को बनाने का श्रेय मैंने ज़रूर लिया। लेकिन उसको बनाने की आवश्यकता ही नहीं थी। शक्तियां उसके पास पहले से ही थीं। मैंने सिर्फ उसको उन अद्भुत सर्प शक्तियों का इस्तेमाल करना सिखाया—
और फिर नागराज के मस्तिष्क में एक मानसिक अवरोध लगाकर मैंने उसको आतंकवादियों के बीच, नीलामी के लिए पेश कर दिया—
नागराज के विषय में इससे ज्यादा मुझे कुछ नहीं पता—
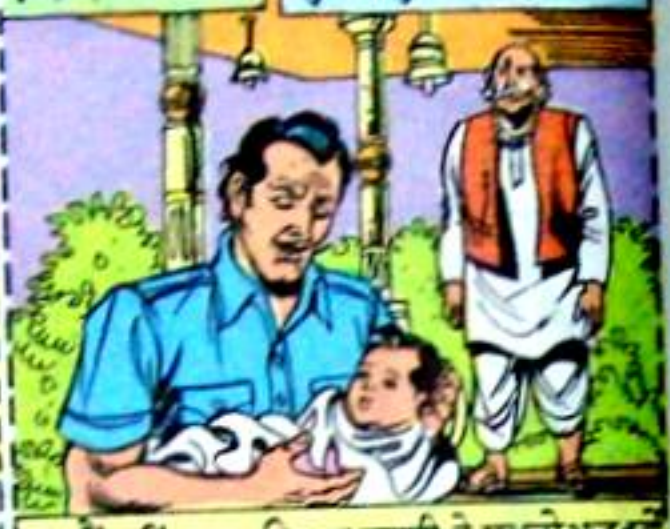
...लेकिन नागराज का मस्तिष्क पढ़ने के बाद, बाबा गोरखनाथ ने नागराज को जो कहानी बताई थी, वह तो यह नहीं थी!
गोरखनाथ ने वही कहानी जानी, जो मैंने नागराज के मस्तिष्क में भरी थी!
और वह मैंने इसलिए किया था ताकि नागराज हमेशा मुझे अपना आविष्कारक मानता रहे, और मेरे वश में बना रहे!
सच्चाई का पता अभी चल जाएगा!
तुमने बताया कि वह मंदिर यहीं आसपास ही है। हमको वहां लेकर चलो!
शायद वहां से पता चल सके कि वह शिशु मंदिर में कहां से आया था!
लेकिन मंदिर पहुंचकर निराशा ही हाथ लगी सबके-
आप जिस समय की बात कर रहे हैं, उस समय मेरे पिता इस मंदिर के पुजारी थे। और उनका स्वर्गवास हुए तो वर्षों बीत गए।
हल्का सा याद पड़ता है, परंतु वह शिशु कहां से आया, यह तो शायद बाबा भी नहीं जानते थे। अगर जानते होते तो कभी न कभी मुझे जरूर बताते!
यानी तुम उस शिशु के विषय में कुछ नहीं जानते?
ओह! यानी ये समस्या वहीं की वहीं...
...अरे! पानी के कल-कल की आवाज! मंदिर के पास कोई नदी बहती है क्या?
हां! एक नदी तो है!

ओह! अब मैं समझ रहा हूं कि वह शिशु इस मंदिर तक कैसे पहुंचा था!
मेरे साथ आओ, नागराज!
लेकिन इस दुष्ट नागमणि का क्या करें?
इसको यहीं पर बांधकर छोड़ दो!
अब हमको इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी!
नागमणि को सर्प बंधनों से जकड़ने के बाद–
हिस्स
नागराज, वेदाचार्य के साथ नदी के किनारे पर जा पहुंचा–
नदी का बहाव किधर से आ रहा है, नागराज?
उस पुराने किले की तरफ से, जहां नागपाशा का अड्डा था!
मैं जानता था! आओ, हमको नदी के बहाव के विपरीत दिशा की तरफ बढ़ना है!
और उसी से यह साबित हो जाएगा नागराज कि खजाने के वारिस तुम ही हो!
मुझे तो इसकी बातें समझ में ही नहीं आ रही हैं!
आखिर नदी के बहाव का मेरे जीवन के तथ्यों से क्या संबंध...

संबंध था और अटूट संबंध था —
और इसका सबूत कई वर्षों बाद तक भी नहीं मिटा था —
रुको, नागराज! हमारी ज्ञानेन्द्रियां संकेत दे रही हैं कि यहां नदी के किनारे आस-पास कुछ विशेष है।
हां, लगता तो है ००० क्योंकि ०००
००० यहां कुछ पशु पक्षियों की हड्डियों के अवशेष पड़े हुए हैं। ऐसा लगता है जैसे इनका मांस पिघलकर इन हड्डियों से अलग हो गया है ०००
००० लेकिन इन हड्डियों से मांस जैसे अलग हुआ है वैसे तो सिर्फ मेरे जहर से ही होता है!
लेकिन मेरा जहर इनके शरीर में कैसे पहुंचा? जबकि आज से पहले मैं यहां कभी नहीं आया!
तुम यहां आए हो नागराज, आज से पहले बचपन में तुम यहां आए हो। और इस नदी का बहाव तुम्हें यहां लेकर आया है।
और इस बात का प्रमाण यहां आस-पास जरूर मिलेगा। ढूंढो उसे!
तलाश जल्दी ही रंग लाई —
ये झाड़ियां! कुछ अजीब सी लगती हैं!
नदी में उगी इन विशेष झाड़ियों का हल्का नीला रंग बताता है कि यह कभी ना कभी मेरे जहर के प्रभाव में जरूर आई हैं। इन्हीं झाड़ियों में बसे जहर की वजह से यहां का पानी जहरीला हो गया है, जिसे पीने वाले पशु-पक्षी जहर के प्रभाव से पिघल गए।

एकदम सही... एकदम सही कहा तुमने नागराज! और ऐसा तब हुआ जब तुम बालक रूप में बहते हुए इन विशेष झाड़ियों में आ फंसे!
और तुम बालक रूप में नदी में इसलिए बहते हुए यहां पहुंचे क्योंकि तुम्हें मृत समझ कर नदी में फेंक दिया गया था!
मृत समझ कर!
लेकिन मेरे चाचा नागपाशा ने तो मुझे कुछ और ही कहानी सुनाई थी!
नागपाशा ने तुम्हें जो कुछ सुनाया वह मन घड़ंत था... झूठ था। तुम्हारा वास्तविक अतीत क्या है। ये तुम्हें हम बताते हैं!
आप मेरे अतीत के बारे में कैसे जानते हैं?
क्योंकि हमने सब कुछ अपनी आंखों से देखा है। राज-ज्योतिषी वेदाचार्य से ना कुछ छिपा है और ना तुम्हारे पिता राजा तक्षकराज ने हमसे कुछ छिपाया है...
...हां नागराज! ध्यान से सुनो!

इसी शताब्दी के शुरू के सालों की बात है। तक्षक नगर नामक एक नगर था...
...जिस पर वीर-प्रतापी न्यायी और प्रजा के सुख-दुःख का ध्यान रखने वाले राजा तक्षकराज, राज किया करते थे—
चूंकि तक्षकराज की पिछली सभी पीढ़ियां हजारों वर्षों से सर्पों की पूजा करती आ रही थीं इसलिए वह भी सर्पों के बहुत बड़े भक्त थे—
सर्पों के प्रताप के बल पर ही तक्षकराज को एक अकल्पनीय खजाना प्राप्त था, जिसकी रक्षा के लिए कुलदेव सर्पदेवता कालजयी सदैव तैनात रहते थे...
खजाने में भरे असंख्य सर्पमणियों और हीरे-जवाहरातों के स्वामी होने के साथ-साथ राजा तक्षकराज—
...एक और बेशकीमती हीरे के स्वामी थे, जिसका नाम था रानी ललिता...
...अत्यंत रूपसी, शालीन और धार्मिक रानी ललिता राजा को बेहद प्रिय थी—
चारों ओर प्रसन्नता और खुशहाली थी। दुःख था तो मात्र एक बात का कि राजा तक्षकराज के वंश को आगे बढ़ाने वाला कोई नहीं था—
विवाह के काफी समय बाद तक भी रानी ललिता निःसंतान थी—

रानी के निःसंतान होने का दुःख राजा के हमशक्ल भाई नागपाशा के लिए प्रसन्नता का कारण था—
भैया तक्षकराज के ना कोई संतान है और ना होने वाली। इसलिए उनकी मृत्यु के पश्चात तक्षक नगर राज्य और खजाने का स्वामी एक ही व्यक्ति बनेगा। मैं...
नागपाशा!
मैं...
सिर्फ मैं...
हा हा हा!
नागपाशा को राजा और खजाने का स्वामी बनने के लिए राजा तक्षकराज की मृत्यु की प्रतीक्षा थी—
लेकिन तभी वह चमत्कार हो गया—
निरन्तर पच्चीस वर्षों से पूजा के थाल को बहुत ही सुंदर ढंग से सजाकर तुम नियमित हमारी अर्चना कर रही हो। हम तुमसे बहुत प्रसन्न हुए। इसलिए हम तुम्हें पुत्रवती होने का वरदान देते हैं।
कुलदेवता कालजयी ने रानी की मुराद पूरी कर दी थी—
...जिसे सुनकर खुशी से नाच उठे राजा तक्षकराज—
ओह प्रिये! कुलदेवता ने हमारी सुन ली। आज हम बहुत प्रसन्न हैं।
चलो, कुलदेवता के प्रताप से राजा का वंश चलाने वाला तो पैदा होगा!
हर कोई प्रसन्न था...

...नागपाशा को छोड़कर—
नहीं। ये नहीं हो सकता। अगर रानी के पुत्र पैदा हो गया तो इस राज्य और खजाने को प्राप्त करने का मेरा स्वप्न चूर-चूर हो जाएगा। ऐसा नहीं होना चाहिए।
अगर वह पैदा हो गया तो, राज्य का कानूनी वारिस वही हो जाएगा। और कालजयी उसी को खज़ाना छूने देगा, जो राज्य का असली वारिस हो।
कड़क
ऐसा नहीं होना चाहिए। पर कैसे? कैसे रोकूं होनी को।
शीघ्र ही—
हां, यही एकदम ठीक रहेगा... कुलदेवता कालजयी ने ही वरदान दिया है। वो ही अभिशाप भी देगा, और ऐसा बहुत जल्द होगा।
चट
संभलकर प्रिये।
कुलदेवता के वरदान से जबसे हम गर्भवती हुए हैं, आप हमारा ख्याल बिल्कुल ऐसे रखते हैं जैसे हम कोई बच्चे हैं।
रखना ही पड़ता है। आखिर तुम हमें अनमोल उपहार देने जा रही हो।
अच्छा-अच्छा। अब ज्यादा बातें मत बनाइए और दरबार में पहुंचिए। हमें भी कुलदेवता की पूजा अर्चना के लिए मंदिर जाना है।

राजा के जाने के बाद रानी ने कुछ देर पहले अपने हाथ से सजाई पूजा की थाली उठाई ...

... और उसे कुलदेवता के सामने लेकर पहुंची —
भोग स्वीकार करें देवता !

कुलदेवता कालजयी ने प्रसन्न भाव से भोग स्वीकार करने के लिए पूजा की थाली से कपड़ा हटाया —
इसी के साथ-
ओह !
क्रोध भरता चला गया कालजयी की आँखों...

... और स्वर में—
पूजा की थाली में आज पूजा सामग्री की बजाए तुमने मरा हुआ नेवला लाकर हमारा घोर अपमान किया है। तुम्हें इसका अत्यधिक कठोर दण्ड मिलेगा।
य... ये कैसे हुआ कुलदेवता, म... मुझे नहीं पता। मैंने तो थाली में...
भयभीत रानी की ...

... अपनी सफाई में कुछ भी कहने का अवसर नहीं मिला—
आऽऽऽ ह!
फुंऽ ऽ ऽ अ
क्योंकि उससे पहले ही कालजयी की भीषण विष फुंफकार का शिकार बनी रानी ...
... कक्ष के बाहर आ गिरी—
उफ्! रानी, कुल-देवता के कोप का भाजन बन गई!
जंगल की आग की तरह फैली इस सूचना ने मानो सभी के हृदयों पर दुःख का पहाड़ रख दिया। राजा तक्षकराज की दशा तो पागलों जैसी हो गई—
कुछ कीजिए, वैद्य जी!
क्षमा करें राजन! मैं अपने सभी प्रयत्न करके हार चुका हूं। संसार के हर सर्प का विष मैं चुटकियों में उतार सकता हूं। लेकिन ये सर्पदेवता कालजयी का विष है। इसे मैं क्या, कोई भी नहीं उतार सकता!
उफ्! नहीं! नहीं!
अपने प्रयासों में विफल हुआ राजा तक्षकराज...
... कुलदेवता कालजयी के समक्ष पहुंच कर गिड़गिड़ा उठा—
ये आपने क्या किया कुलदेवता, बिना कुछ सोचे-समझे ही एक निर्दोष को इतना बड़ा दण्ड दे डाला... ये कैसा न्याय किया देव आपने! ये कैसा न्याय किया?
दोष रानी का ही था राजन! उसे थाली का निरीक्षण करके ही यहां लाना था। अब चूंकि अपने विष के प्रभाव को हम भी समाप्त नहीं कर सकते, इसलिए हम विवश हैं।

अगर ऐसा है देव तो अपनी रानी बिना हम भी जीवित नहीं रहना चाहते। आपके सामने सिर पटक-पटक कर यहीं जान दे देंगे हम।
एक भक्त अपने देवता के सामने अपनी जान देने पर उतारू था...
धाड़. धड़ंध
...तो देवता कैसे ना पसीजते–
ठहरो राजन! एक उपाय है। जिससे रानी के प्राण बच सकते हैं।
क्या देव! जल्दी से बताइए!
रानी का शरीर एक नहीं बल्कि दो है। एक उसका खुद का और एक उसके गर्भ में पलते बालक का!...
...इसलिए हम उन दोनों में से एक शरीर को बचा सकते हैं। रानी के शरीर का जहर, रानी के गर्भ में केन्द्रित कर सकते हैं।
अब तुम बताओ कि तुम क्या चाहते हो! रानी की जान या बच्चे की जान।
राजा को निर्णय लेने में अधिक समय नहीं लगा–
उस बालक से भला क्या मोह करना देव, जो अभी इस संसार में आया भी नहीं है। इसलिए मैं रानी को बचाना चाहता हूं!
ठीक है!
इतना कहकर...

कुलदेवता ने एक विचित्र सी मणि राजा के हाथ पर उगल दी-

ये चमत्कारी मणि है। इसे राजवैद्य को दो, जो इसे घिसकर औषधि के साथ रानी को पिलाएगा। इसके प्रभाव से हमारा सारा विष धीरे-धीरे रानी के गर्भ में पलते बालक के शरीर में समाता चला जाएगा। चूंकि बालक के जन्म लेने से पहले सारा विष उसके शरीर में समा चुका होगा...
...इसलिए वह बालक रानी के गर्भ से मृत पैदा होगा!

मणि लेकर राजा तक्षकराज दुःखी मन से कक्ष से बाहर निकल आए-

देखते ही देखते यह खबर आग की तरह फैल गई-
उफ्! अब राजा का नाम लेने वाला कोई न होगा। क्योंकि वैद्यराज कहते हैं कि कुलदेवता के प्रभाव से रानी की कोख बिल्कुल ही सूख गई है। रानी सदा के लिए बांझ होकर रह जाएंगी!

और इस तरह राज्य और खजाने का स्वामी बनूंगा मैं। रानी की पूजा की थाली में मरे हुए नेवले की वजह से यह अनर्थ होगा, ये तो मैं उसी समय जानता था जब मैंने बड़ी सफाई से वह थाली बदली थी!

अब बस रानी के गर्भ से मृत बच्चे के जन्म लेने भर की देर है। फिर देखता हूं कालजयी कैसे वह खजाना मुझे नहीं सौंपता!

ठीक समय पर जैसा कि अपेक्षित था, रानी ललिता के गर्भ से मृत बच्चे यानी शायद तुम्हारा जन्म हुआ!
मृत! लेकिन मैं तो जीवित हूं।
और न केवल जीवित हूं, बल्कि आपके हिसाब से मेरी आयु लगभग पिचहत्तर या अस्सी वर्ष होनी चाहिए!
यही! यही तो वह रहस् है नागराज, जिसने हमें संशय में डाल रखा है। इस रहस्य से तो हमें पर्दा उठा है...
...लेकिन यह सब बाद में। पहले आगे की कहानी सुनो।
रानी ललिता बच गई। उनकी कोख से कालदेवता के जहर से नीले पड़े बालक का जन्म हुआ, जिसे राजवैद्य ने देखते ही मृत घोषित कर दिया—
लेकिन उनकी घोषणा से किसी क हैरानी नहीं हुई। सभी जानते थे ऐस ही होगा—
अब इस बालक का क्या किया जाए राजन?
परम्परा के अनुसार जिस बालक या व्यक्ति की मृत्यु सर्पविष से हो जाती है उसे न गाड़ा जाता और न जलाया जाता है। उसे नदी में बहाया जाता है। इसलिए हमारे इस पुत्र भी नदी में बहा दो।
इतना कहकर फफक पड़े थे राजा तक्षकराज—

जबकि खुशियां मनाता हुआ कुलदेवता कालजयी के समक्ष जा पहुंचा था नागपाशा-
मैं यह अच्छी तरह जानता हूं कालजयी कि तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध ब्रह्माण्ड की कोई भी शक्ति इस खजाने के पास नहीं फटक सकती, लेकिन आज मैं इस खजाने को हासिल करने आया हूं। और तुम्हें इसे सहर्ष मुझे सौंपना होगा! क्योंकि...
...नियमानुसार भैया तक्षकराज की मृत्यु के बाद अब सिर्फ मैं ही इसका हकदार होऊंगा। हट जा एक तरफ कालजयी और ये खजाना मुझे हासिल कर लेने दे।
नागपाशा ने खजाने की तरफ कदम बढ़ाया...
स्तो- सावधान! नागपाशा! खजाने की तरफ अब एक भी कदम बढ़ाया तो उसका परिणाम भयंकर होगा। तू इस खजाने का हकदार जब बनेगा, तब बनेगा। अभी तो इसका असली हकदार जीवित है।
क्या मतलब?
मतलब तेरी समझ में नहीं आएगा नागपाशा!
इसलिए भाग!
भाग तू यहां से!
कालजयी की उस प्रतिक्रिया ने...

••• नागपाशा के क्रोध को भड़का दिया। वह अपनी तलवार खींचकर उसकी तरफ झपटा –
कालजयी! मैं तुझे छोड़ूंगा नहीं दुष्ट!
लेकिन –
तड़
कालजयी की पूंछ का वह तेज प्रहार •••
••• नागपाशा के चेहरे के लिए अभिशाप और उसके जीवन के लिए वरदान साबित हुआ –
छ्च
स्स्स
ओह! मुझे विष और अमृत से भरे इन पात्रों को ऐसे यहां पर नहीं रखना चाहिए था•••
••• मेरे प्रहार से नागपाशा इन पात्रों पर एक साथ गिर गया है। अब जहां विष उसका चेहरा बदसूरत कर देगा, वहीं अमृत उसको अमर कर देगा!
आ
नागपाशा चीखता हुआ बाहर की तरफ भाग खड़ा हुआ –

इधर ०००
००० बालक को लहरों के हवाले कर दिया गया था–
जो उसे अपने साथ बहाकर ना जाने कहां ले गई थी–
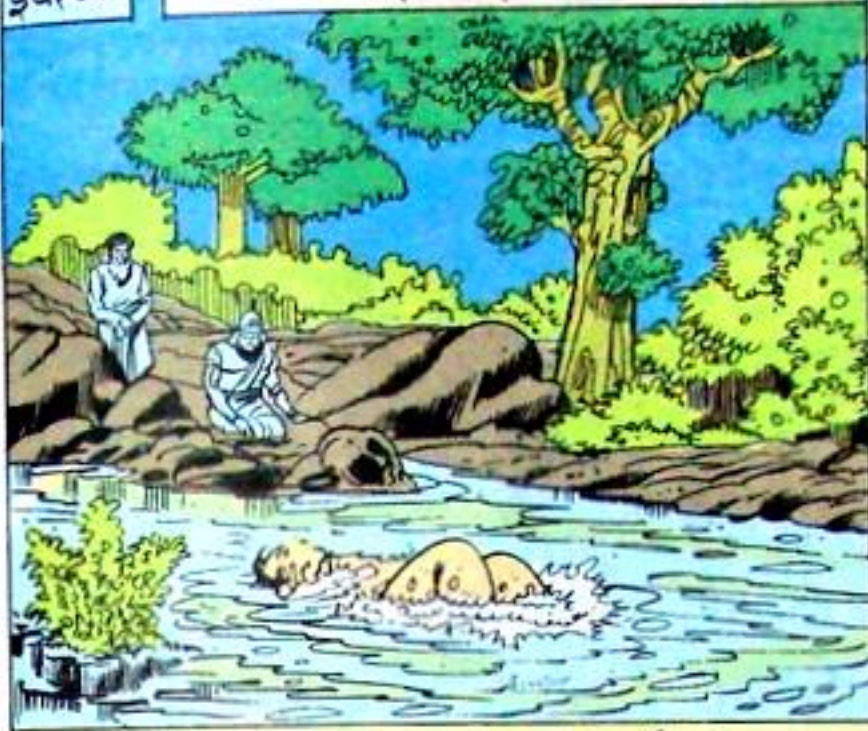
और दूसरी तरफ सर्पमहल में जब राजा तक्षकराज को नागपाशा की दशा का पता चला तो–
ओफ! कुलदेवता ने ये क्या किया? मुझे तुरन्त ही उनसे मिलना होगा!

तक्षकराज, कुलदेवता के पास पहुंचे तो उन्हें सारी बात का पता चला–
ओह! ये सब नागपाशा का किया-धरा था। उफ्! सगा भाई होते हुए भी उसने हमारे साथ ऐसा विश्वासघात किया। होश में आने दीजिए उसे अपने पुत्र के उस हत्यारे को हम अत्यधिक कठोर दण्ड देंगे!

लेकिन आपके कथन से लगता है कि शायद मेरा पुत्र जीवित हो। मेरे जीवित रहने के लिए यही आशा बहुत है!
महल में आते ही उन्होंने राजज्योतिषी वेदाचार्य अर्थात हमें अपने पास बुलाया और कहा–
यह सब अनर्थ खजाने के लिए ही हुआ है। इसलिए हम अपना सारा खजाना तिलिस्म में रखना चाहते हैं। जो हमारे पुत्र के नाम से बांधा जाएगा ०००

...अगर वह जीवित होगा तो एक न एक दिन वह उस तिलिस्म को तोड़कर जरूर खज़ाना हासिल करेगा, आप पहुंचे हुए ज्योतिषी हैं...
...नक्षत्र ग्रह और शिल्पियों की सहायता से आपने एक जटिल तिलिस्म का निर्माण करना है!
जो आज्ञा राजन!
फिर हमारी देख-रेख में बनाए गए तिलिस्म में वह खज़ाना और तुम्हारे जीवन से संबंधित सारी घटनाओं को लिखकर एक पाण्डुलिपि के रूप में रख दिया गया...
...और कुलदेवता कालजयी से प्रार्थना करके उन्हें खज़ाने का प्रमुख रक्षक बना दिया गया—
नागपाशा, जो कि अब अमर हो चुका था को जब यह सूचना मिली तो वह खज़ाना हाथ से निकल जाने की वजह से ऐसा आग-बबूला हुआ कि उसने राजा तक्षकराज व रानी ललिता की हत्या कर दी—
खटच्याक
और फिर नागपाशा, अपने गुरू की मदद से तुमको, यानी खज़ाने के असली हकदार को ढूंढ़ने में जुट गया। जब सारी कोशिशें नाकाम हो गईं तो उसने उन स्वप्नों को तरंगों के रूप में भेजना शुरू कर दिया—
चले आओ... चले आओ...
जो तुमने देखे और उनके पीछे-पीछे नागपाशा के किले तक आ गए—
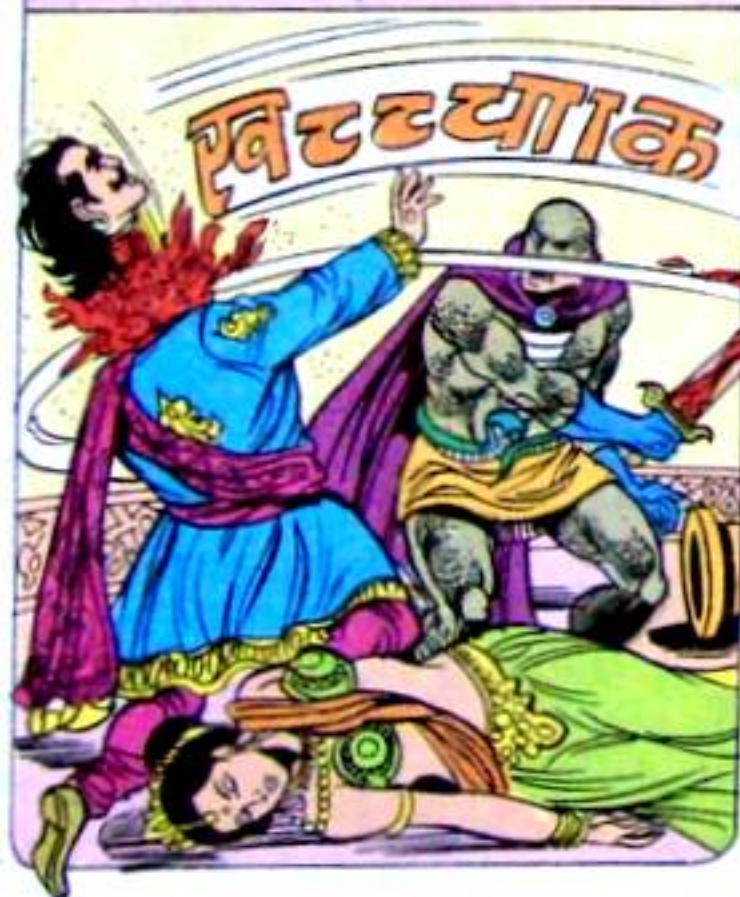
ओह! तो मेरा चाचा नागपाशा ही मेरे माता-पिता का कातिल है!
हां, नागराज! अब इस कहानी में सिर्फ एक कड़ी गायब है। और वह यह कि तुम बीच के चालीस या पचास साल तक किस स्थिति में रहे। और... और उस दौरान तुम्हारा विकास क्यों नहीं हुआ?
खैर! यह रहस्य भी कभी न कभी पर्दे से बाहर आ जाएगा! अभी तो हमें खजाने को तुम्हारे हवाले करके अपने कर्त्तव्य से मुक्त होना है!
कहां है वह खजाना?
मेरी पोती के पास सुरक्षित रखा है!
आपकी पोती! लेकिन... लेकिन वह खजाना तो फेसलेस ले गया था!
हां! वह भी हमारा ही आदमी है। आओ, चलते हैं वापस!
पर... पर ये फेसलेस है कौन?
फेसलेस यानी रूपहीन! और जिसका रूप ही न हो, उसकी पहचान भला कौन कर सकता है, नागराज!
लेकिन वापस मंदिर में—
अरे! पुजारी जी की ये हालत किसने की?
और... नागमणि भी गायब है। पर कैसे?
पुजारी को खोलो! यही हमारे प्रश्नों के उत्तर देगा!

मुक्त होते ही पुजारी ने बताया—
आप लोगों के जाने के थोड़ी देर बाद मैं भगवान का भोग लेकर मूर्ति की तरफ जा रहा था...
...कि तभी मेरे सिर पर पीछे से एक वार हुआ! यह वार किसने और कैसे किया, मुझे कुछ नहीं पता!
होश में आने पर मैं एक खंभे से बंधा हुआ था। बस! इससे ज्यादा मुझे कुछ नहीं पता!
ओह! यह तो बहुत बुरा हुआ! अब वह दुष्ट न जाने क्या गुल खिलाएगा!
वह दिन जब आएगा, तब उससे भी निपट लेंगे...
...अभी तो वापस चलते हैं। हमारे कॉटेज में हमारा इंतजार कर रही होगी हमारी पोती...
भारती—
स्वागत है नागराज!
यह मेरी पोती है नागराज! भारती!
आओ नागराज! तुम्हारा खजाना तुमको सौंपकर हम दादा-पोती भी अपने उत्तरदायित्व से मुक्त हो जाएं।
भारती ने एक मूर्ति के साथ छेड़खानी की, और...
घर्र र्र र्र र्र
...फर्श का टुकड़ा एक तरफ सरक गया—
आइए!
बड़ी अनोखी जगह है!
दादाजी की बनाई हुई है। जिस आदमी ने कई जटिल तिलिस्म बनाए हैं उसके लिए इस जगह को बनाना तो बाएं हाथ का खेल है।
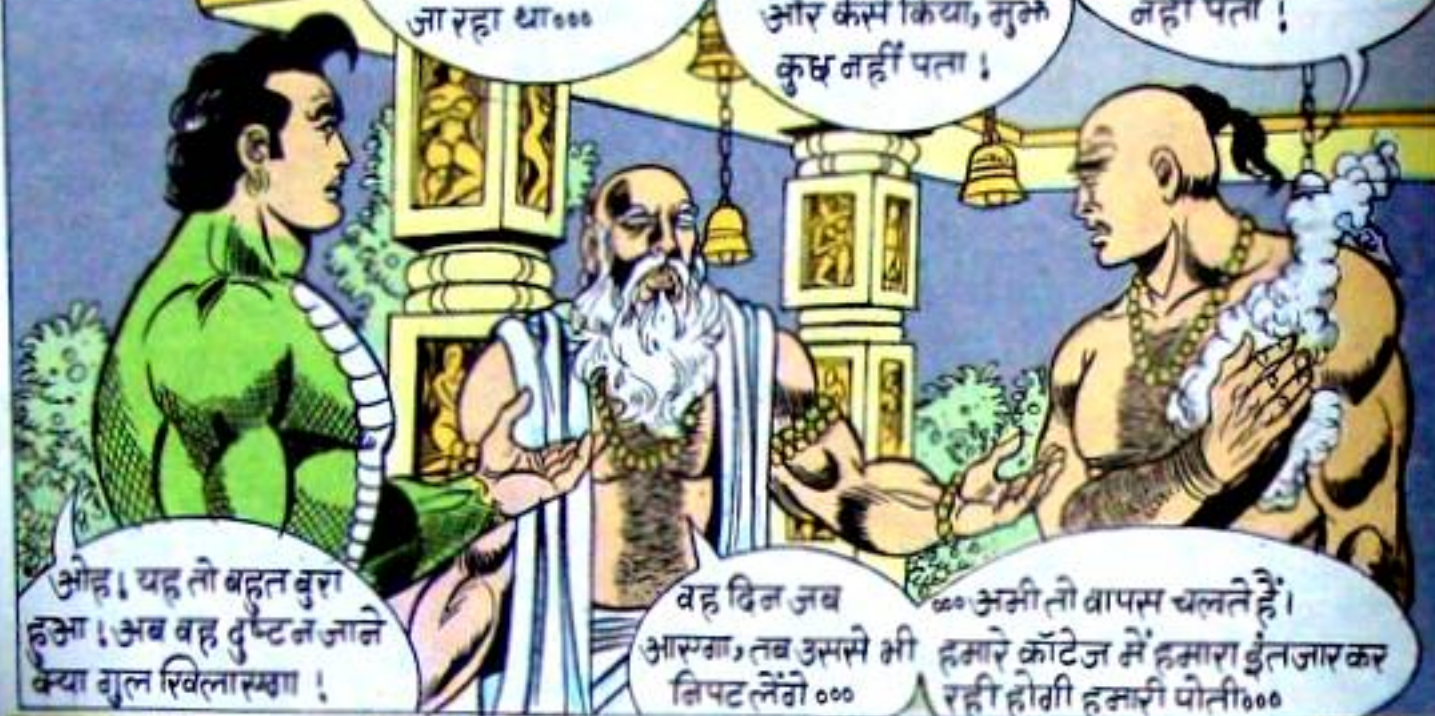
भारती, नागराज को सीधे तहखाने में ले गई, जहां पर सामने रखा था...

खजाना!

ये तुम्हारा है, नागराज! और तुम इसका जो चाहे वह कर सकते हो।

मुझे इस खजाने से कोई मतलब नहीं है, भारती...

...मुझे तो यह पाण्डुलिपि चाहिए थी। जिसमें लिखा हुआ है मेरा अतीत! शायद इससे मुझे उन प्रश्नों के उत्तर मिल सकें, जिन्हें अब तक रहस्यों ने अपने पर्दे में छिपाए रखा है।

इसमें सिर्फ वही लिखा है नागराज, जो मैंने तुमको बताया है। न कम, न ज्यादा!

वैसे इस खजाने का तुमने क्या करने की सोची है, नागराज?

शाबाश, नागराज! तुम भी अपने पिता की तरह ही अपने से ज्यादा देशवासियों के विषय में सोचते हो!
मुझे तुम पर गर्व है बेटे!
और मुझे ये सोचकर शर्म आ रही है...
...कि तू मेरा भतीजा है, नागराज।
ऐसा मूर्ख भतीजा, जो अपना खजाना, गैरों पर लुटाने की सोच रहा है!
नागपाशा!
तू यहां तक कैसे आ गया?
वैसे तो पहले मेरे गुरू को शक हुआ था कि खजाना उड़ाने के पीछे वेदाचार्य का हाथ है। हम बुड्ढे की तलाश के लिए यंत्रों से छेड़खानी कर ही रहे थे...
...कि यंत्र नागराज के शरीर की तरंगें पकड़ने लगा। बस फिर क्या था, यंत्रों की मदद से इस स्थान का पता लगाकर मैं यहां तक आ गया...
अच्छा हुआ, तू अपने-आप मेरे पास आ गया, नागपाशा!
...ताकि अपना खजाना तो वापस ले ही आऊं।

...वर्ना मुझे अपने माता-पिता के हत्यारे की तलाश में न जाने कहां-कहां भटकना पड़ता!
ओह!
यानी बुड्ढे वेदाचार्य ने तुम्हें सब बता दिया है!
ताड़.
तब तो इसने तुम्हें यह भी बता दिया होगा कि...
खटाच
खून उतर आया था नागराज की आंखों में। क्रोध में वह यह भी भूल गया था कि...
...नागपाश ने अमृत पिया हुआ है।
अमर हो गया है नागपाश! अब वह मर नहीं सकता...
ठप
...लेकिन जिसे चाहे, उसे मार सकता है!
स्नटैक

श्रीकृष्ण ने भी अश्वत्थामा को अमरत्व प्रदान किया था, नागपाशा !
लेकिन वह वरदान नहीं शाप था। और वही शापदेव कालजयी के जरिए किस्मत ने तुझे दिया है।
क्योंकि किस्मत नहीं चाहती कि तेरे जैसा पापी मरकर दुनिया से छुटकारा पा जाए।
वह तेरी हालत, मौत से भी बदतर करना चाहती है। ताकि तू जिन्दा रहे और दुनिया तुझ पर थूके।
थूड़.
चाचा के पैर छूने के बजाए, उस पर दुनिया से थुकवाना चाहता है, भतीजे !
तब तो मैं तुझे आशीर्वाद देता हूं कि तेरी उमर भी मुझको लग जाए !
तड़ाक
नागराज वार तो बचा गया। लेकिन हवा में उड़े, पत्थर के एक टुकड़े ने...
...उसके होशोहवास छीनकर उसको, नागपाशा के रहमो-करम पर डाल दिया—
मुझे तो रोना आ रहा है। मेरा एकमात्र रिश्तेदार भी संसार से विदा हो रहा है।
और ये दुखदायी काम मुझको अपने हाथों से करना पड़ रहा है।

हम तुम्हारी आत्मा को दुखी नहीं होने देंगे, नागपाशा!
नागराज तुम्हारे हाथों से नहीं मरेगा!
घड़ाक
अह! बहुत जान बाकी है तेरी बूढ़ी हड्डियों में वेदाचार्य!
ला, इसकी चूर-चूर करके रख दूं!
बेकार कोशिशें मत करो, नागपाशा!
मेरा सिद्धि तावीज तुम्हारे हर वार को रोक सकता है!
वेदाचार्य में हाथी सा बल अब तक बाकी तो था, परन्तु वह अकूत पिस्हुए नागपाशा के बल के सामने फीका था—
तो अगर ये मुकाबला लात-घूसों से ही तय होना है, तो ये ही सही!
ताड़
आह!
एक ही वार में, वेदाचार्य का सिर घूम गया—
लेकिन नागपाशा को दूसरा वार करने का मौका नहीं मिला—
क्योंकि होश में आ चुका नागराज और भारती एक साथ उस पर टूट पड़े थे—
तड़ाक
धड़ाक
ओह! ये तीनों मुझ पर भारी पड़ रहे हैं, क्योंकि ये मुझ पर अलग-अलग वार कर सकते हैं!

इनसे निबटने के लिए मुझे अतिरिक्त शक्ति की आवश्यकता है। और उस शक्ति को प्राप्त करने के लिए मुझे अपने गुरू से संपर्क बनाना होगा!
नागपाशा ने अपने गुरू से न जाने कैसे संपर्क कायम किया—
और—
य... ये क्या हो रहा है?
नागपाशा के शरीर में एकाएक ये आश्चर्यजनक बदलाव कैसे?
यह जानने की क्या जरूरत है? मरने के बाद इस जानकारी का तुम लोग आखिर करोगे क्या?
ताड़:
धड़ाक

ओफ़! असाधारण शक्ति भरी हुई थी इस वार में। जिसने भारती और बाबा को बेहोश कर डाला। मुझे इसके वारों से बचना होगा। वरना मेरा हाल भी...
... इन दोनों जैसा होगा...
आह!
धड़ाक
नागराज के संभल पाने से पहले ही...
... नागपाशा ने उसे दबोच लिया-
आह! अब तू आया है मेरी पकड़ में भतीजे! और इस शिकंजे से तू छूट नहीं सकता!
क्योंकि यह शिकंजा मेरे गुरू की असाधारण यांत्रिक शक्ति का कमाल है। वे अपनी प्रयोगशाला से ऐसी विशेष तरंगें भेज रहे हैं, जो मेरे शरीर से टकराकर ठोस तीन आयामी वस्तुओं का रूप ले रही हैं!
अब अपनी मौत को जी भर देख ले, नागराज! क्योंकि कुछ ही पलों में तेरी आंखें अपने कटोरों से बाहर उबल आएंगी!

आह! इसकी पकड़ से छूटना सचमुच मुश्किल काम है। लेकिन इसके गुरू द्वारा भेजी गई, विशेष तीन आयामी तरंगों को इसी का शरीर ही क्यों ग्रहण कर रहा है। मेरा क्यों नहीं?
जवाब साफ है। इसके पास जरूर कोई ऐसा यंत्र है, जो इन तरंगों को ग्रहण कर रहा है।
और उस यंत्र को रखने की सबसे अच्छी जगह बेल्ट ही हो सकती है।
सौडांगी!
नागराज के शरीर में वास करने वाली सौडांगी, नागराज के शरीर में से निकलने से पहले ही उसके मानसिक विचारों को जान चुकी थी—
अगले ही पल, नागपाशा के शरीर से उसकी बेल्ट अलग हो गई—
और नागपाशा अपने सामान्य रूप में वापस आ गया—
य... यह क्या हो गया?
यानी मेरा ख्याल सही निकला!
तरंगों का रिसीवर इस बेल्ट में ही था!

अब क्या ख्याल है, चाचा? अपने- आपको मेरे हवाले कर रहे हो या नहीं?
धगड़ंक
अपने चाचा को हारा हुआ मत समझ, नागराज!
... एक लड़ाई हारने का मतलब युद्ध हारना नहीं होता, भतीजे!
कड़ंड़ंड़ंम
ओह! तू क्यों खामख्वाह बार-बार मेरा सिर काट रहा है, भतीजे? तू जानता है कि ये हर बार फिर से जुड़ जाएगा!
खचचच
इस बार नहीं चाचा! क्योंकि इस बार तेरे भतीजे का फुटबाल खेलने का मूड है!
ठक्क
तो फिर मैं तुमको युद्ध में ही हरा देता हूं, नागपाशा!

और मैं वह खिलाड़ी हूं, जो फुटबाल को गोल तक पहुंचने ही नहीं देता।
हवा में लहराकर, नागपाश की तरफ बढ़ती उसकी खोपड़ी हर बार नागराज की ठोकर खाकर पलटती रही—
ठाक
आखिरकार—
धाड़
वेदाचार्य! इस खोपड़ी को पकड़कर रखिए। आपकी फौलादी पकड़ से छूट कर ये कहीं नहीं जा सकती...
...और नागपाश मेरी गिरफ्त से बचकर नहीं जा सकता!
क्योंकि असली खोपड़ी के बगैर ये कुछ भी देख नहीं सकता!
तड़ाक
एक बार इसको अच्छी तरह से पीटकर बेदम कर लूं!
उसके बाद इसको अपनी नागरस्सी के ऐसे शिकंजे में जकड़कर छोड़ूंगा, जिससे ये अमर नागपाश कयामत तक बाहर नहीं निकल पाएगा!
धम्म

इसी वक्त- नागपाशा के किले में बनी प्रयोगशाला में--
ओह ! यह क्या ?
क्या हुआ गुरुदेव ?
नागपाशा से हमारा संपर्क एका एक टूट गया। जरूर वह किसी मुसीबत में फंस गया होगा केंद्रकी !
उसे बचाना होगा, केंद्रकी ! उसे बचाना होगा हमें !
लेकिन गुरुदेव ! नागपाशा ने तो अमृतपान किया हुआ है। उसका भला कौन कुछ बिगाड़ सकता है !
वह मर नहीं सकता। उसके अंग-अंग काट दो तो वे फिर से वापस जुड़ जाते हैं।
हां ! लेकिन सिर्फ तब, जब उनको वापस जुड़ने दिया जाए। अगर अंगों का आपस में स्पर्श ही न हो पाए तो वे जुड़ेंगे कैसे ?
यह सच है, केंद्रकी कि नागपाशा मर नहीं सकता...
... परन्तु यह भी सत्य है कि उसको आसानी से बंदी बनाया जा सकता है। मैं उसको वापस बुला रहा हूं।
अभी !

और अगले ही पल कॉटेज में-
नागराज और भारती की विस्फारित आंखों के सामने से नागपाशा एक रोशनी के झमाके के साथ गायब हो गया-
?
!!
और साथ ही गायब हो गई वेदाचार्य के हाथों में थमी उसकी खोपड़ी-
यह क्या?
ऐसा लग रहा है, जैसे यह खोपड़ी गायब हो रही हो। पर कैसे?
नागराज से सारी बात जानने के बाद-
ओह! ये जरूर नागपाशा के गुरू का काम होगा। वह एक विलक्षण यांत्रिक ज्ञान रखने वाला व्यक्ति है!
खैर! अब क्या करना चाहिए?
फिलहाल तो हमको खजाना लेकर यहां से तुरन्त निकल जाना चाहिए, नागराज!
नागपाशा यहां पर जरूर वापस आएगा। उसको हमने एक बार तो हरा दिया है...
...लेकिन बार-बार ऐसा कर पाना बहुत मुश्किल काम है। हमको खजाना बचाना है!
लेकिन हम जाएंगे कहां पर?
महानगर!
जहां पर सारा इंतजाम पहले ही किया जा चुका है, नागराज!

और फिर- महानगर में स्थित एक मकान में-

इस मकान को मैंने खास तौर से बनाया है, नागराज! इसमें कई गुप्त कमरों के साथ-साथ बाहर जाने के गुप्त रास्ते भी हैं।
यह मकान एक छोटा-मोटा किला है, नागराज!

लेकिन इतनी सुरक्षा किसलिए वेदाचार्य? खजाने के लिए?
नहीं, नागराज! तुम्हारे लिए।
मेरे लिए?
लेकिन मैं यहां नहीं रह सकता, वेदाचार्य! मेरा घर तो पूरी दुनिया है। मैं तो घूमता ही रहता हूं।

दुनियाभर में घूमने वाले और भी कई हैं नागराज! लेकिन हर व्यक्ति का अपना एक ठिकाना जरूर होता है...
...जहां पर वह जब चाहे तब लौटकर आ सके।

अपने आप को ध्यान से देखो नागराज! तुम कितने अकेले हो! तुम्हारी अपनी कोई जिन्दगी नहीं है। तुम तो सिर्फ आतंकवाद खत्म करने वाली एक मशीन बनकर रह गए हो। लेकिन फिर भी तुम आतंकवाद को खत्म नहीं कर पाए। आतंकवाद तभी खत्म होगा, जब तुम समाज को संगठित करके आतंकवाद के खिलाफ खड़ा कर दोगे...

...और यह काम सिर्फ समाज के बीच में रहकर किया जा सकता है।

आपका कहना सही है वेदाचार्य! मैं सचमुच कभी-कभी अपने-आपको बहुत अकेला महसूस करता हूं!

लेकिन मैं समाज से अलग रहने के लिए विवश हूं।

आतंकवाद के खिलाफ की गई एक लंबी लड़ाई ने मेरे दुश्मनों की लिस्ट को काफी लम्बा बना दिया है...

...और वे मेरी जान के दुश्मन बन चुके हैं...

...अगर मैं समाज में रहा तो मेरे नए-नए दोस्त जरूर बनेंगे। और मेरे दुश्मन उनके जरिए मुझ तक पहुंचने की कोशिश करेंगे।

ऐसा अभी-अभी मेरी एक मित्र मानवी के साथ हो चुका है, वेदाचार्य! मेरे कारण उसके पूरे परिवार की जान खतरे में पड़ गई थी...

...अब आप ही बताइए, क्या मेरा समाज में रहना, समाज की खतरे में डालना नहीं होगा?

नहीं, नागराज! ऐसा नहीं होगा! तुम्हारी इस समस्या का हल है मेरे पास!

••• और उस बड़े पैसे को समाज के कल्याण के लिए खर्च किया जाए।
बात में दम तो है। लेकिन ऐसा तो सिर्फ बिजनेस करके ही हो सकता है, भारती! और बिजनेस के बारे में मैं कुछ नहीं जानता!
मैं एक सेटेलाइट चैनल में काम करती हूं, नागराज। हम अपने कई चैनलों के जरिए कई तरह के प्रोग्राम दिखाते हैं। लेकिन उनमें से अधिकतर प्रोग्राम समाज को बिगाड़ने वाले होते हैं!
हम एक नया 'सेटेलाइट चैनल' शुरू कर सकते हैं। जिसमें हम अच्छे-अच्छे प्रोग्राम दिखा सकते हैं!
ठीक है। उस चैनल का नाम हम 'भारती कम्युनिकेशन' रखेंगे!
और उसके चेयरमैन की कुर्सी पर बैठोगे तुम •••
••• नागराज!
न बाबा न! मैं कंपनी से जुड़ा जरूर रहूंगा। लेकिन एक मामूली कर्मचारी की हैसियत से•••
••• वर्ना मेरी आतंकवाद के खिलाफ की जंग में बहुत रुकावटें आएंगी!
पर••• पर चक्कर तो यही है!
नागराज ऐसे खुले आम समाज में नहीं रह सकता!
मेरे दुश्मन अगले दिन ही उस कम्पनी को उड़ा देंगे!
मैंने कहा न कि तुम्हारी समस्या का हल है मेरे पास। तुम आओ मेरे साथ। तुमको चाहिए समाज को दिखाने के लिए एक नया रूप•••

... ताकि तुम समाज के साथ घुलमिलकर रह भी सको...
... और तुम्हारे दुश्मन तुमको पहचान भी न सकें।
बस! थोड़ी सी 'हाईनेक' और ऊपर कर लो...
... और तैयार हो गया है नागराज का नया रूप...
लेडीज़ एंड जैंटलमैन...
... मिलिए अपने पुराने दोस्त से एक नए रूप में... मि० राज के रूप में।...
... अब से दोस्तों के साथ दोस्ती करेगा राज...
... और दुश्मनों पर कहर बनकर टूटेगा...
नागराज!
समाप्त